रबड़ के पेड़ से टायर तक

अली मिटगुत्स्चो

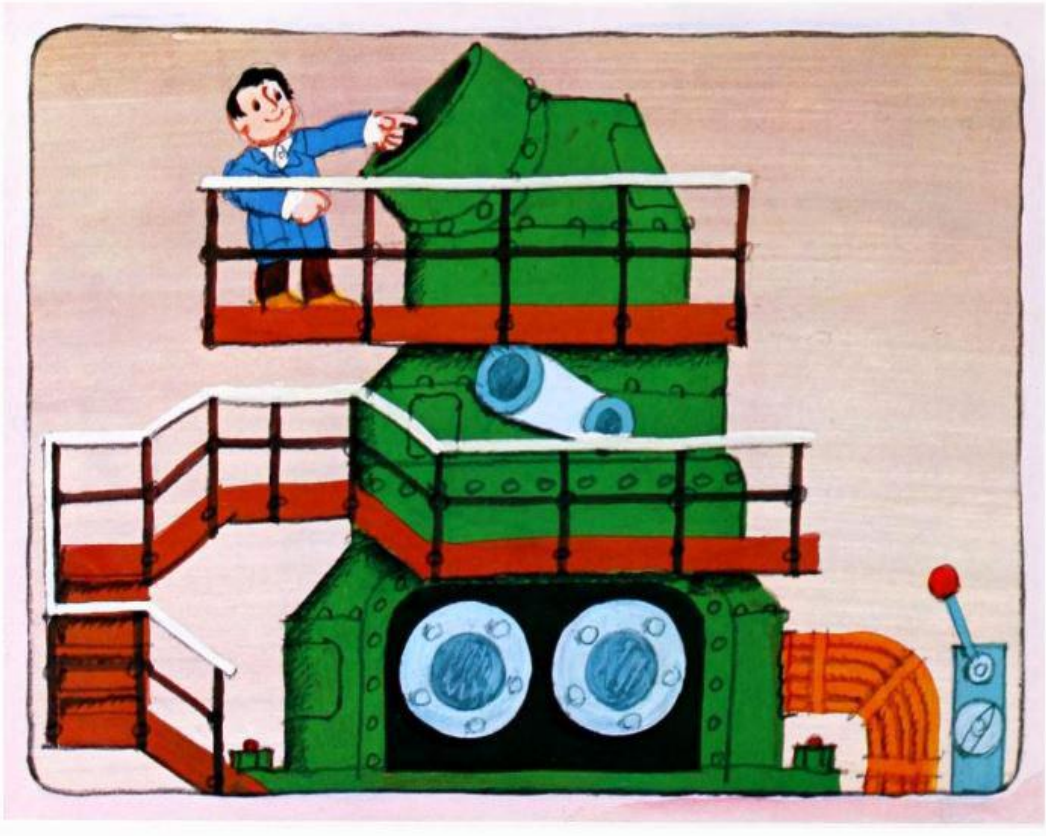

रबड़ के पेड़ से टायर तक

अली मिटगुत्स्चो

रबड़ के पेड़ से टायर तक

अली मिटगुत्स्चो

दुनिया के गर्म, नम हिस्से "ट्रॉपिक्स" कहलाते हैं.

रबड़ के पेड़ "ट्रॉपिक्स" में उगते हैं.

पेड़ों से रबड़ निकालने के लिए, लोग पहले लंबे,
तेज चाकू से पेड़ की छाल में खांचे काटते हैं.

और खांचे के नीचे प्याले लटकाते हैं.

रबड़ का रस, जिसे लेटेक्स कहते हैं
खांचों से रिस-रिसकर कपों में नीचे इकठ्ठा होता है.

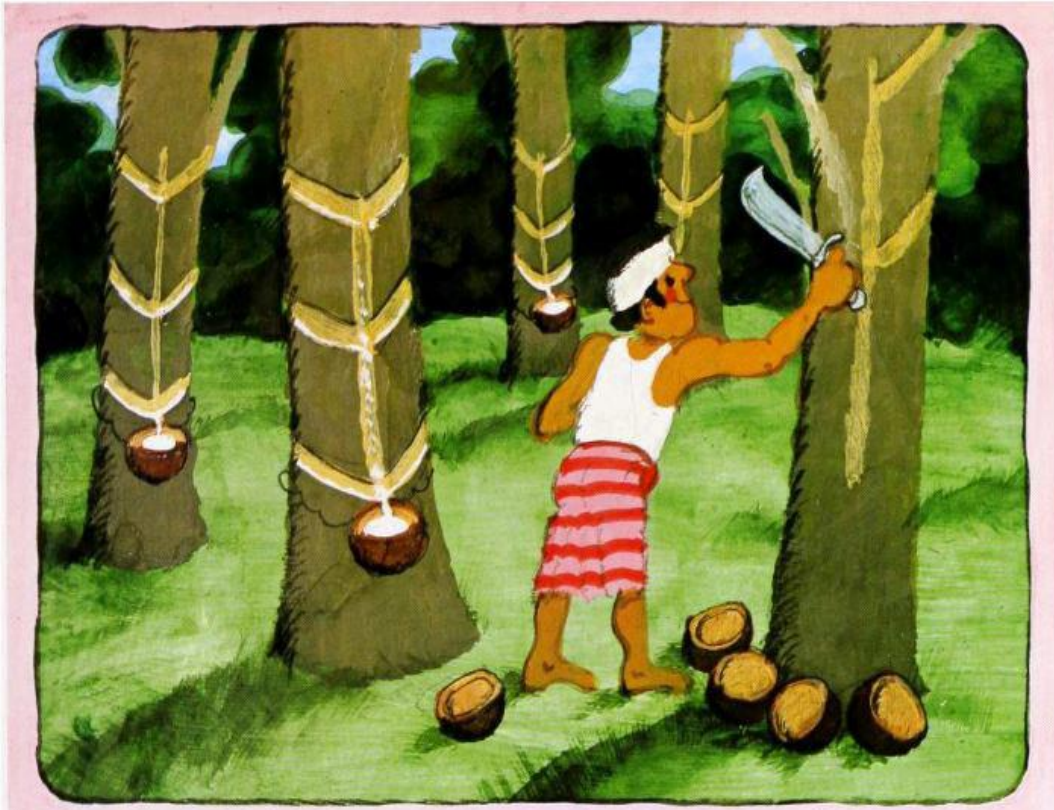

हर दिन, लोग पेड़ों से बाल्टियों में रबड़
का रस इकट्ठा करते हैं.

रबड़ का रस, दूध की तरह सफेद होता है.

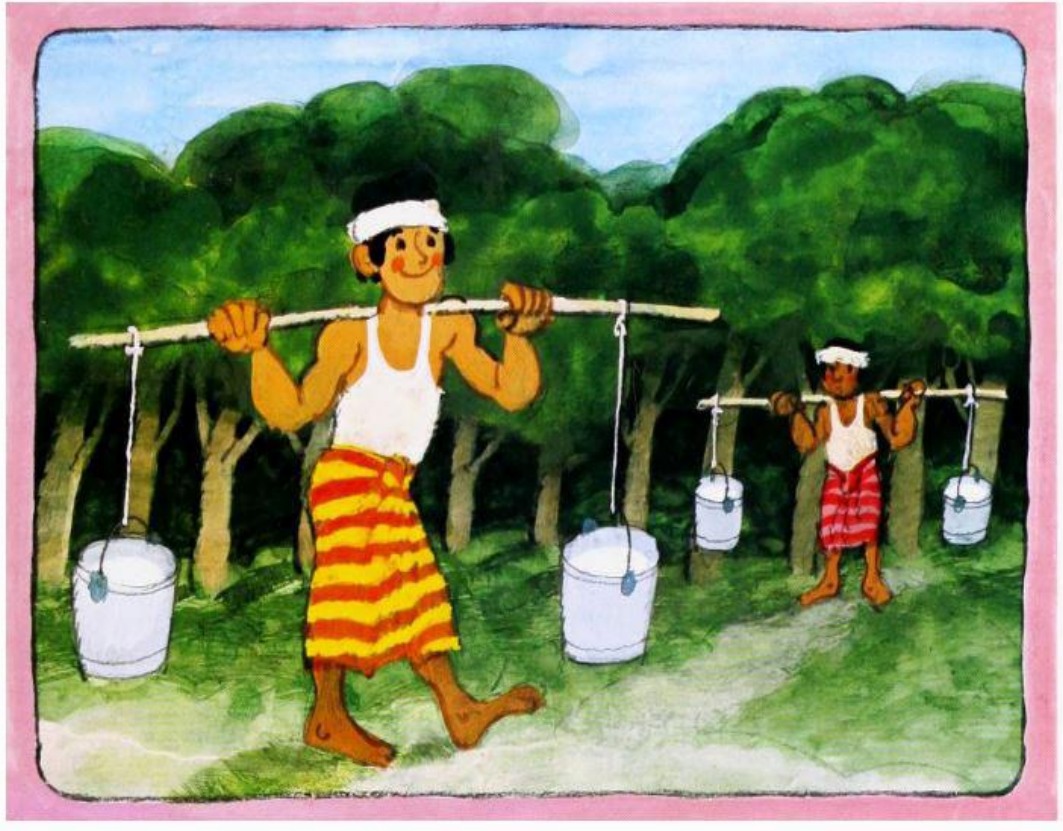

लेटेक्स को फिर बड़े ड्रमों में डाला जाता है.

लेटेक्स में पानी डाला जाता है.
फिर उस मिश्रण को एक छलनी से छाना जाता है.

उससे पत्ते, टहनियाँ और छाल आदि अलग हो जाते हैं.

फिर फॉर्मिक एसिड नाम का एक रसायन, लेटेक्स में मिलाया जाता है.

इससे लेटेक्स गाढ़ा हो जाता है.

और रबड़ के ठोस टुकड़े सतह पर तैरने लगते हैं.

लेटेक्स के इन ठोस टुकड़ों को "कच्चा रबड़" कहते हैं.

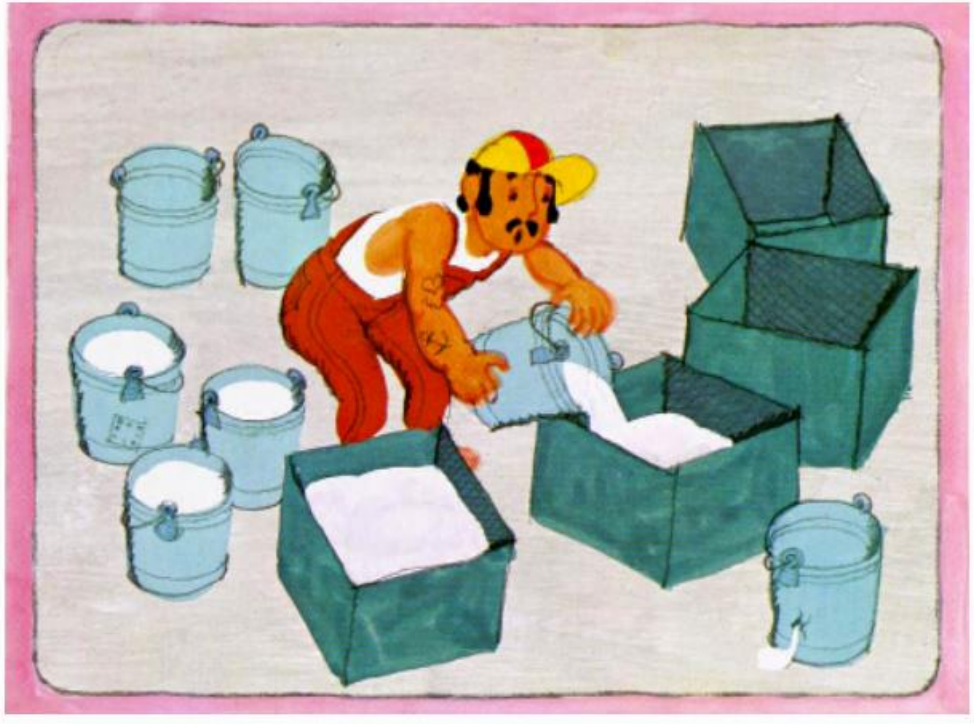

"कच्चे रबड़" को दुनिया भर में बड़े-बड़े जहाजों में लादकर भेजा जाता है.

बंदरगाह में, कच्ची रबड़ की गांठों को ट्रेनों में लादा जाता है.

ट्रेन, उन्हें रबड़ कारखानों तक ले जाती हैं.

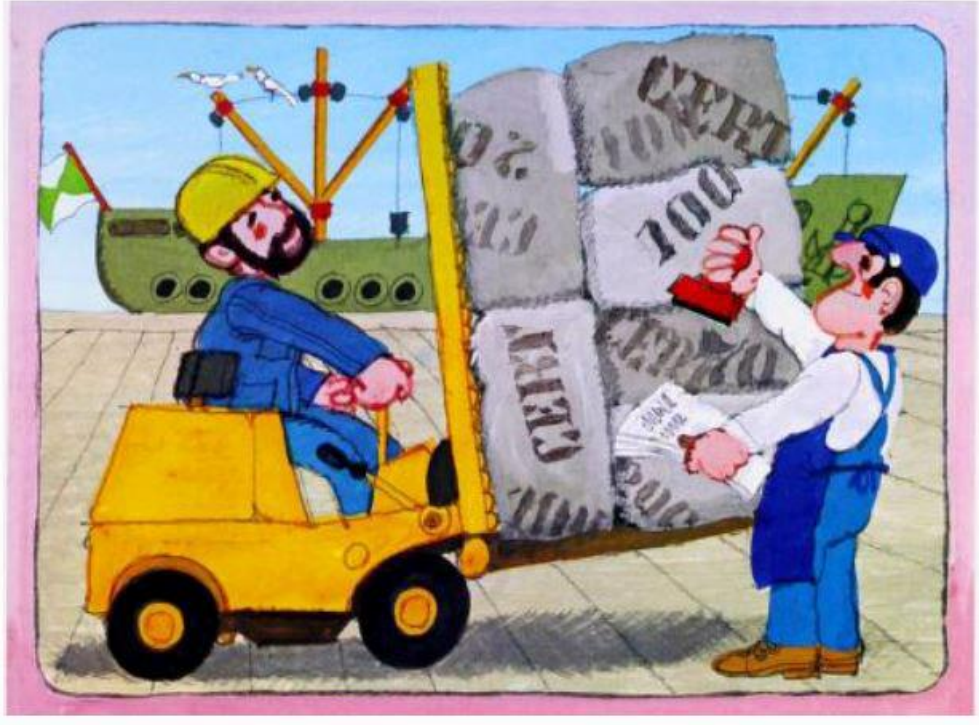

कुछ रबड़ कारखानों में, कच्ची रबड़ को एक मशीन, बड़े चाकू से छोटे-छोटे टुकड़ों में काटती है.

फिर उसे उन रसायनों के साथ मिलाया जाता है जो रबर को मजबूत बनाते हैं और उसे लंबे समय तक टिकाए रखते हैं.

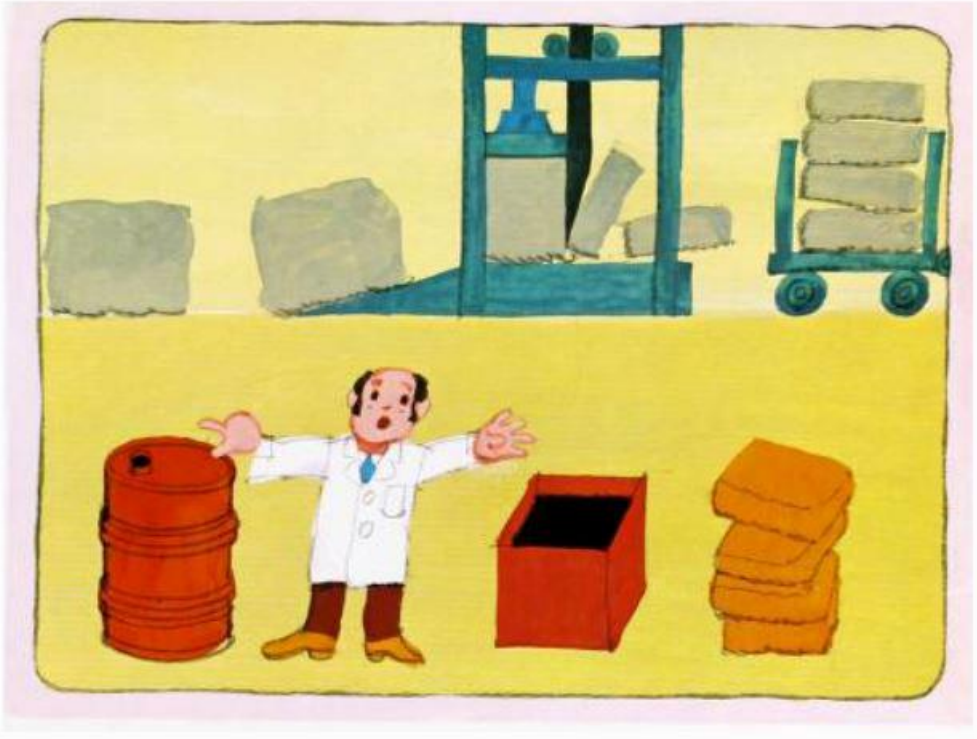

एक मशीन रबड़ को रसायनों के साथ मिलाती है.

फिर मशीन रबड़ के मिश्रण को, गाढ़ा पेस्ट बनने तक गर्म करती है.

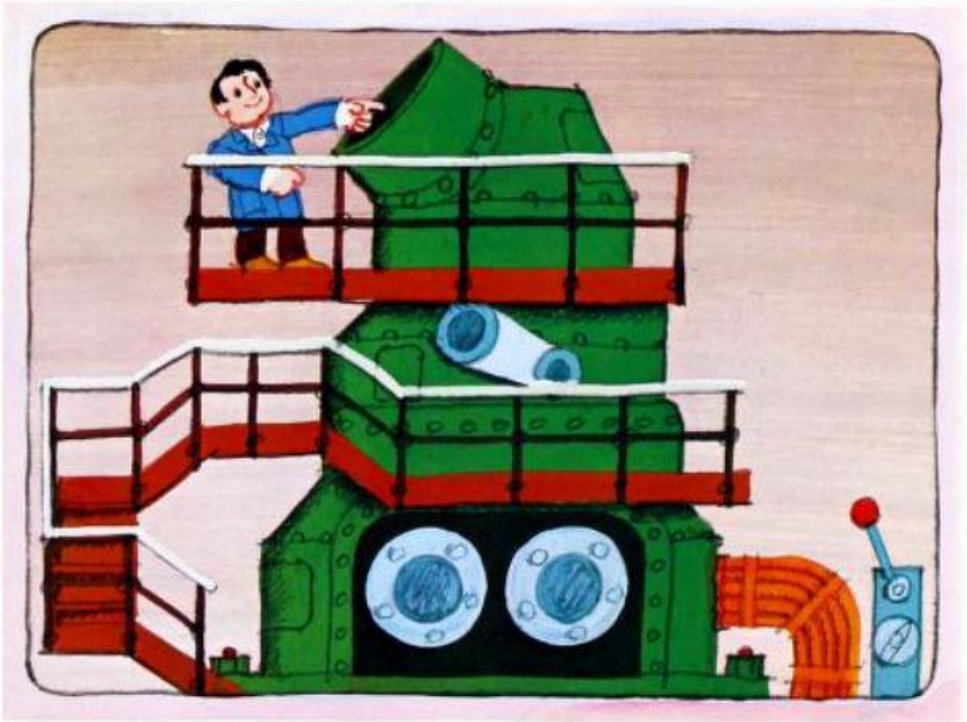

रबड़ के पेस्ट को, स्टील के बने सांचों में डाला जाता है और फिर तेज़ गर्मी में, टायरों के आकार में दबाया जाता है.

टायरों को मजबूत बनाने और उन्हें फटने से बचाने के लिए रबड़ में एक विशेष कपड़े के रेशों को डाला जाता है.

रबड़ से बने टायरों का उपयोग कारों, बसों, हवाई जहाजों, साइकिलों और अन्य वाहनों में किया जाता है.

रबड़ से कई अन्य उत्पाद भी बनाए जाते हैं.

जैसे रबड़ की नाव (राफ्ट), सॉकर बॉल, गुब्बारे, रबड़ बैंड और लचीले पाइप.

अंत